जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आत्मार्थी को निमित्तों की खोज में व्यग्र नहीं होना चाहिये।

- बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-36

वर्ष : 25, अंक : 13 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (प्रथम) 2002 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देशभर में पर्वाधिराज दशलक्षण पर्व सानन्द सम्पन्न

इस वर्ष देश के कोने-कोने से दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ 540 (पाँच सौ चालीस) आमंत्रण पत्र प्राप्त हुये। जिसमें संस्था के द्वारा 525 स्थानों की पूर्ति की जा सकी। इस अवसर पर सभी जगह मिलाकर 3 लाख 32 हजार रुपये का सत्साहित्य तथा 12 हजार 649 घण्टों के सी.डी. प्रवचन एवं 17 हजार 460 के प्रवचनों के कैसिट घर-घर पहुँचे।

11 सितम्बर से 20 सितम्बर तक आयोजित इस पर्वाधिराज के अवसर पर देश-विदेश में हुई महती धर्म प्रभावना एवं तत्त्वज्ञानवर्द्धक कार्यक्रमों के समाचार सभी स्थानों से प्राप्त हो रहे हैं। स्थान सीमित होने से समाचार सम्पूर्णत: प्रकाशित करना तो सम्भव नहीं है, फिर भी मूल बातों को ध्यान में रखते हुये सारांश के रूप में संक्षिप्त समाचार यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: पूजन के पश्चात् गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन चलते थे। तत्पश्चात् प्रथम प्रवचन पण्डित जवाहरलालजी विदशा का मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं द्वितीय प्रवचन विदुषी ब्र.कल्पनाबेन सागर द्वारा समयसार पर होता था। दोपहर में पण्डित जवाहरलालजी का समयसार एवं ब्र. कल्पनाबेन का तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन होता था। रात्रि में ब्र. कल्पनाबेन के दशलक्षण धर्मों पर विशिष्ट प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ ।

मुम्बई (दादर) : यहाँ समाज के विशेष आग्रह पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल पधारे। आपके द्वारा प्रतिदिन प्रात: समयसार की विषयवस्तु एवं रात्रि में दशधर्मों पर अत्यंत मार्मिक प्रवचन हुये, जिसका अपार जन-समुदाय ने लाभ लिया। आपके प्रवचन प्रतिदिन टी.वी. पर भी प्रसारित किये गये। साथ ही डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व दोनों समय पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री रायपुर के तथा यथासमय पण्डित रत्नेशकुमारजी शास्त्री के प्रवचन हुये।

इसी अवसर पर दिनांक 19 सितम्बर 2002 को रात्रि में डॉ. भारिल्लजी का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया । श्री विजयकुमारजी द्वारा भारिल्लजी का परिचय दिया गया।

रात्रि में पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री रायपुर द्वारा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। विशिष्ट उपलब्धि के रूप में यहाँ जैनपथ-प्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान के 70 सदस्य बनें।

इसके पूर्व श्वेताम्बर पर्यूषण के अवसर पर अध्यात्म स्टडी सर्किल में डॉ. भारिल्ल के विभिन्न विषयों पर मार्मिक व्याख्यान हुये। इसी अवसर पर 10 सितम्बर 2002 के दिन आपको **महामहोपाध्याय** की उपाधि से अलंकृत किया गया।

मुम्बई (मलाड़) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के प्रात: पूजन के पश्चात् ग्रन्थाधिराज समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक व दश धर्मों पर प्रभावी शैली में मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल पण्डित संभवजी द्वारा भक्तामर की कक्षा ली गई ।

दोपहर में पण्डित जितेन्द्रजी द्वारा छहढाला विषय पर कक्षा चली तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। **- प्रवीण शाह**

मुम्बई (घाटकोपर) : यहाँ प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् ब्र. यशपालजी जैन बेलगांव द्वारा छहढाला पर तथा रात्रि में जिनधर्म प्रवेशिका पर सारगर्भित प्रवचन हुये। सायंकाल पण्डित अनिल जैन ने बालबोध पाठमाला की कक्षा ली एवं रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये ।

ब्र. यशपालजी की प्रेरणा से लगभग 100 से अधिक लोगों ने जिनवाणी को अपने कंठ का हार बनाया।

साहित्य की कीमत कम करने के लिये लगभग 7000 रुपये प्राप्त हुये साथ ही वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथ प्रदर्शक के अनेक सदस्य बनें।

मुम्बई (बोरीवली) : यहाँ पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर के प्रात: एवं रात्रि दोनों समय ग्रन्थाधिराज समयसार की 13 वीं गाथा पर रोचक शैली में मार्मिक प्रवचन हुये। यहाँ एक दिन पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री के प्रवचन का लाभ भी मिला।

उदयपुर (हिरणमगरी सेक्टर 11) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रात: द्रव्यदृष्टि प्रकाश के आधार से समयसार गाथा-6 व 7 पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल द्वारा छहढाला की कक्षा ली गई। रात्रि में प्रतिदिन भारिल्लजी के दशलक्षण धर्म पर प्रवचन के पश्चात् श्रीमती

(शेष पृष्ठ 4 पर .....)

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

15

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

ऐसा कहकर वह देव उस दम्पति युगल का अपहरण करके अपने विमान में बिठाकर उन्हें दक्षिण भरत क्षेत्र की ओर आकाश में उड़ तो गया; परन्तु संयोग से उसीसमय चम्पापुरी के राजा चन्द्रकीर्ति का मरण हो चुका था। अतः उस देव ने उस आर्य विद्याधर को हृदय की उदारता से प्रेरित होकर यहाँ लाकर चम्पापुरी का राजा बना दिया। इसतरह देव ने उनकी विद्यायें नष्ट कर दण्डित भी कर दिया और चम्पापुरी का राजा बनाकर उसे कृतार्थ भी कर दिया , उस पर उपकार भी कर दिया।

उस विद्याधर दम्पत्ति ने अपनी पूर्व भव की भूल का अहसास करते हुए पंखकटे पक्षियों की भाँति आकाश में चलने में असमर्थ हो जाने पर भी आकाश गमन की इच्छा छोड़कर पृथ्वी पर रहने में ही संतोष धारण किया।

यह वृतान्त दसवें तीर्थंकर शीतलनाथ भगवान के तीर्थ में हुआ था। राजा आर्य ने अपने भुजदण्ड से समस्त राजाओं को वश में करके अपना आज्ञाकारी बनाया और प्रेममूर्ति मनोरमा के साथ चिरकाल तक राज सुख एवं विषय सुख का उपभोग किया; परन्तु वह दम्पति उस सांसारिक सुख से तृप्त नहीं हुआ, होता भी कैसे? राज–काज और विषयों में सुख है ही कहाँ? जो उसे मिलता और वह तृप्त होता। कहा भी है –

जो संसार विषें सुख होता, तीर्थंकर क्यों त्यागें।
काहे को शिवसाधन करते, संयम सों अनुरागे।।

कालान्तर में इन्हीं राजा आर्य और मनोरमा के 'हरि' नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो इन्द्र के समान प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ। राजा आर्य और रानी मनोरमा ने चिरकाल तक पुत्र की असीम धन–सम्पत्ति और अपार वैभव का सुख भोगा। तत्पश्चात् दोनों अपने–अपने कर्मो के अनुसार परलोकवासी हो गये।

यही राजा हरि और उनके नाम पर चले यशस्वी हरिवंश की उत्पत्ति का प्रथम चरण है। इन राजा हरि के महागिरि नामक पुत्र हुआ। महागिरि के उत्तम नीति का पालक हिमगिरि हुआ। हिमगिरि के वशुगिरि और वशुगिरि के 'गिरि' नामक पुत्र हुआ।

ये सभी यथायोग्य स्वर्ग और मोक्ष को प्राप्त हुए इसके बाद हरिवंश के तिलकस्वरूप इन्द्र के समान सैकड़ों राजा हुए जो क्रम से विशाल राज्य और तप का भार धारण कर कुछ तो मोक्ष गये और कुछ स्वर्ग गये।

इसप्रकार क्रम से बहुत से राजाओं के होने पर उसी हरिवंश में बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के जीव की स्वर्ग से आयु पूर्ण होने के काल में कुछ समय पूर्व मगध देश का स्वामी राजा सुमित्र हुआ। वह विशिष्ट ज्ञान से विभूषित था। वह अपनी जिनभक्त प्रिया पद्मावती के साथ सुख का उपभोग करता हुआ चिरकाल तक शासन करता रहा।

सोलहवें सर्ग में – कहा है कि दसवें तीर्थंकर शीतलनाथ भगवान के पश्चात् जब कालक्रम से नौ तीर्थंकर भरत क्षेत्र में जगत के जीवों के हितार्थ धर्मतीर्थ की प्रवृत्ति कर मोक्ष चले गये और बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ का जीव स्वर्ग से माता के गर्भ में आने के सन्मुख हुआ, तब गर्भ में आने के छह माह पूर्व से इन्द्र की आज्ञा से कुबेर प्रतिदिन राजा सुमित्र के घर रत्नों की वर्षा करने लगा।

कोमल शय्या पर शयन करनेवाली रानी पद्मावती ने इसी बीच रात्रि के अन्तिम समय सोलह स्वप्न देखे। प्रातः उठकर रानी पद्मावती राजा सुमित्र के पास गई और राजा से उन सोलह स्वप्नों का फल पूछा।

महाराजा सुमित्र ने हर्षित होते हुए कहा – हम दोनों को शीघ्र ही तीन जगत के स्वामी जिनेन्द्र भगवान शीतल नाथ के जीव के माता–पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा। अर्थात् हमारे घर में तीर्थंकर का जीव जन्म लेगा।

यथासमय गर्भ कल्याणक महोत्सव मनाया गया। तदनन्तर रानी पद्मावती ने माघकृष्णा द्वादशी की शुभतिथि में श्रवण नक्षत्र में, बिना किसी श्रम के मनुष्यों के नेत्रों को आनन्ददायक मुनिसुव्रत जिनेन्द्र को पुत्र के रूप में जन्म दिया। तीर्थंकर बालक का जन्म होते ही तीनों जगत के सभी इन्द्रों के आसन और मुकुट कंपायमान हो गये। उन्होंने अपने अवधिज्ञान से जान लिया कि तीनलोक के नाथ तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ है। देवदुंदुभियों से सभी देवों को भी यह निश्चय हो गया कि तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ है। सभी देव देवेन्द्र तीर्थंकर बालक का जन्मोत्सव मनाने चल पड़े। कुशाग्रपुर में हर्षोल्लासपूर्वक सभी देव–देवेन्द्र जन्माभिषेक के लिये बालक मुनिसुव्रत को ऐरावत हाथी पर बिठाकर सुमेरु पर्वत पर ले गये। वहाँ पाण्डुकशिला पर स्थित सिंहासन पर तीर्थंकर बालक को विराजमान कर क्षीरसागर के पवित्र प्रासुक जल से 1008 कलशों द्वारा अभिषेक किया गया। नानाप्रकार की स्तोत्रों द्वारा स्तुति की और उनका मुनिसुव्रत नामकरण कर दिया। तत्पश्चात् बालक को माँ की गोद में देकर इन्द्रगण अपने अपने स्थान पर चले गये।

जन्म से ही मति, श्रुत, अवधिज्ञान के धारक बालक मुनिसुव्रत शुक्लपक्ष के चन्द्र की कलाओं की भाँति बढ़ने लगे। युवा अवस्था प्राप्त होने पर नाना अभ्युदयों की धारक सुन्दरतम स्त्रियों ने उनका वरण कर उनसे विवाह रचाया। फिर मुनिसुव्रतनाथ राज्य सिंहासन पर आरूढ़ हो गये। वे हरिवंशरूपी आकाश के मानों सूर्य ही थे। जो प्रजारूपी कमलिनियों को खिला रहे थे। अधीनस्थ राजा–महाराजा और देवगण जिनके चरणों की सेवा करते थे ह्न ऐसे महाराज मुनिसुव्रतनाथ ने चिरकाल तक सबप्रकार से राज्य सुख का उपभोग किया।

एक दिन शरद ऋतु के समस्त धान्यों की शोभा से युक्त दिशाओं को देखते–देखते उन्होंने एक ऐसा मेघ देखा, जो चन्द्रवत सफेद ऐरावत हाथी सा जान पड़ता था। प्रचण्ड वायुवेग के आघात से उस मेघ से समस्त अवयव नष्ट हो गये। वह आकाश में ही विलीन हो गया। यह देखकर वह विचार करने लगे – अरे ! यह विलीन हुआ शरद ऋतु का मेघ माना भोगों में लिप्त संसारी प्राणियों को क्षणभंगुरता का संदेश देने ही आया हो और आते ही शीघ्र विलीन हो गया।

वे आगे विचार करते हैं कि अपने–अपने परिणामों के अनुसार संचित ये साता कर्म और आयु कर्मरूप मेघ भी इसीतरह निःसार एवं क्षणिक हैं; जिनके कारण ये क्षणिक शरीर व सुख सामग्री के संयोग प्राप्त होते हैं। मृत्यु रूपी प्रचण्ड वायुवेग के एक ही झकोरे में सब संयोग नष्ट हो जाते हैं। **(क्रमशः)**

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(108 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

दो घड़ी पुरुषार्थ करे तो केवलज्ञान हो जाये - ऐसा कहा है। पर्वतादि को छिन्न-भिन्न करने के लिये कैसा भी पुरुषार्थ करे तो भी दो घड़ी में नहीं होगा; इस अपेक्षा देखें तो केवलज्ञान कितना सुलभ है, यह विचार कर!

जो बातें जीव को प्रमादी बना दें, ऐसी बातें नहीं सुननी चाहिये। इसी प्रमाद के कारण तो जीव अनादि से भटक रहा है।

जीव संसारी आलंबनों को छोड़ता नहीं है और खोटे आलंबन लेकर कहता है कि कर्मोदय होने के कारण मेरे से कुछ नहीं हो पाता। ऐसे बहाने बना कर पुरुषार्थ नहीं करता। अरे ! तुम तो पुरुषार्थ करो, जब कर्म का उदय काल विघ्न उत्पन्न करेगा तो उसका उपाय भी करेंगे। पुरुषार्थी को कोई भी कर्म बाधक नहीं बनते। अत: तुम तो पुरुषार्थ करो, तुम्हारे मार्ग से कर्म स्वयं हट जायेंगे।

जो धर्म जगत को कठिन लगता है वह कितना सुलभ है। जरा सोचो तो सही। दो घड़ी में छोटे से छोटा नास्ते जैसा काम भी सही ढंग से पूरा नहीं होता और केवलज्ञान दो घड़ी में हो जाता है। केवलज्ञान प्राप्त करना कितना सुलभ और स्वाधीन है। और उसकी तुलना में भोग सामग्री प्राप्त करना, धनार्जन प्राप्त करना आदि कितना दुर्लभ है। कितना पराधीन है ? परन्तु संसारी जीवों को अनादि-कालीन अभ्यास के कारण ये सांसारिक कार्य सुलभ लगते हैं और अनाभ्यास के कारण अत्यन्त सुलभ आत्मोपलब्धि, केवलज्ञानादि की प्राप्ति कठिन लगती है।

यहाँ कहते हैं कि अभेद आत्मस्वभाव के आश्रय से ही वीतराग धर्म प्रगट होता है। इसी के आश्रय से धर्म बढ़ता है और इसी के आश्रय से धर्म की पूर्णता होती है। इसके सिवाय शरीर आदि की कोई क्रिया से या व्रतादि के शुभ परिणामों से जब धर्म की शुरुआत ही नहीं होती तो पूर्णता होने की तो बात ही क्या ? ज्ञानी के भी साधकदशा में पर के अवलम्बन का भाव आता है; परन्तु वह यह भलीभाँति जानता है कि ये भाव धर्म नहीं है।

जब तक निमित्त पर, राग पर या भेद पर दृष्टि रहती है तबतक आत्मा को सम्यग्दर्शन नहीं होता। जब निमित्त राग और भेद - इन तीनों की उपेक्षा करके अभेद आत्मस्वभाव के सन्मुख हो, तभी निर्विकल्प सम्यग्दर्शन प्रकट होता है। भेद पर दृष्टि रखने से निर्विकल्पदशा नहीं होती; किन्तु राग होता है। इस कारण जब तक रागादि मिटते नहीं, तबतक भेद को गौण करके अभेद आत्मस्वरूप का निर्विकल्प अनुभव कराने में आता है। अभेद की मुख्यता एवं भेद की गौणता करके स्वभाव की ओर ढलते हुये शुद्ध आत्मा की प्राप्ति होती है। गुणस्थान की वृद्धि अभेद स्वभाव के आश्रय से होती है। जब दृष्टि में से एक क्षण के लिये भी अभेदस्वभाव का आश्रय छूटे तो धर्मदशा नहीं टिकती। आत्मस्वभाव की कैसी अचिन्त्य महिमा है ? कि उसे उसीरूप में पहिचानकर, यदि उस स्वभाव का ही अवलम्बन करे तो निर्विकल्प अनुभव से सम्यग्दर्शनरूप चौथा गुणस्थान प्रकट होता है। वहीं से धर्म की अपूर्व शुरुआत होती है, साधक भाव प्रारंभ होता है। तत्पश्चात् आगे-आगे की साधकदशा भी उस अभेदस्वभाव के निर्विकल्प अनुभव से प्रकट होती है। चौथे गुणस्थान में कोई व्यवहार व्रतादि के कितने ही शुभभाव करे; परन्तु उन शुभभावों से गुणस्थान नहीं बढ़ता; किन्तु आत्मा के अभेदस्वभाव का उग्र अवलम्बन लेने से ही गुणस्थान बढ़ता है। गुणस्थान की वृद्धि कहो, धर्म की वृद्धि कहो या साधक भाव की वृद्धि कहो - सब एक ही बात है और सबमें वृद्धि करने की एक ही रीति है। इसलिये प्रारंभ से लेकर जहाँ तक रागादि का अभाव होकर केवलज्ञान न हो वहाँ तक उस अभेदस्वभाव को ही मुख्य करके उसी का निर्विकल्प अनुभव करने का उपदेश आचार्यों ने दिया है। **(क्रमश:)**

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का -

26 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन जयपुर (राज.) में -

(13 अक्टूबर 2002 से 15 अक्टूबर 2002 तक)

ज्ञातव्य है कि फैडरेशन का प्रतिवर्ष दिसम्बर माह में होनेवाला अधिवेशन इस वर्ष टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में ही 13 से 22 अक्टूबर 2002 तक लगनेवाले आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के अवसर पर 13 से 15 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है।

अधिवेशन एवं शाखाओं की मीटिंग का कार्यक्रम निम्नानुसार है -

13 अक्टूबर 2002 - राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों की मीटिंग एवं विशेष आमंत्रितों की विशेष मीटिंग।

14 अक्टूबर 2002 - प्रान्तीय पदाधिकारियों एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग।

15 अक्टूबर 2002 - राष्ट्रीय अधिवेशन ।

अधिवेशन के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर निम्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना है -

1. राष्ट्रीय भाषण प्रतियोगिता - 13 अक्टूबर 2002
2. राष्ट्रीय अन्ताक्षरी प्रतियोगिता - 14 अक्टूबर 2002

राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम विजेता टीम को अथवा शाखा को सम्मान मेंमन्टो के साथ 1000 रुपये से एवं द्वितीय विजेता टीम को अथवा शाखा को 500 रुपये से पुरस्कृत किया जायेगा।

ब्र. जतीशचन्द शास्त्री (राष्ट्रीय अध्यक्ष) **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (राष्ट्रीय महामंत्री) **शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल** (राष्ट्रीय मंत्री)

नोट - इन सबका विस्तृत प्रारूप फैडरेशन शाखाओं को पृथक से भेजा गया है, जिन शाखाओं को न मिला हो, वे कृपया केन्द्रीय कार्यालय, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 से मंगा लेवें। सभी शाखायें पत्र-व्यवहार अवश्य करें।

(पृष्ठ 4 का शेष ...)

भारिल्लजी द्वारा प्रश्नमंच लिया गया। रात्रि में प्रवचनोपरान्त श्रीमती आशा जैन एवं कु. शिरोमणि जैन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन आयोजित अभिनन्दन समारोह में श्री शान्तिलालजी ठाकुरिया एवं ताराचन्दजी जैन ने पण्डितजी का सम्मान किया। **– किरण जैन**

उदयपुर (मुमुक्षु मण्डल.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के मंत्री पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के प्रात: सामूहिक पूजन के पश्चात् समयसार के निर्जरा अधिकार पर सारगर्भित प्रवचन हुये। यहाँ प्रात: एवं दोपहर पूज्य गुरुदेवश्री का टेप प्रवचन चलता था। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त पद्मनन्दी पंचविंशतिका, कार्तिकेयानुप्रेक्षा एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार पर छाबड़ाजी के दशधर्मों पर प्रवचन हुये। रात्रि में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। **– सुजानमल गदिया**

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा साधनानगर स्थित दि. जैन पंचबालयति जिनालय में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर के प्रात: समयसार के निर्जरा अधिकार पर तथा सायंकाल दशलक्षण धर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

प्रात: प्रवचन के पूर्व सामूहिक पूजन एवं प्रवचन के पश्चात् तत्त्वार्थसूत्र का विशेष अर्थ किया जाता था, जिसका लोगों ने दूर-दूर से आकर लाभ लिया। दोपहर में पण्डित कपूरचन्दजी करेली के प्रवचन का लाभ भी समाज को मिला। सायंकाल प्रवचन के पूर्व जिनेन्द्र भक्ति होती थी।

इसी अवसर पर मुमुक्षुओं ने जिनमंदिर के रजत द्वार हेतु चांदी प्रदान की तथा साहित्य की कीमत कम करने में सहयोग दिया। **– मनोहरलाल काला**

दुर्ग (छ.ग.) : यहाँ पण्डित हरकचन्दजी बिलाला अकोला के प्रात: दशलक्षण पूजन के आधार पर एवं पश्चात् समयसार गाथा-13 पर प्रवचन हुये। रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक के सातवें अधिकार पर सारगर्भित प्रवचन हुये। **– कुन्दनमल सेठी**

खुरई (सागर) : यहाँ पण्डित कस्तूरचन्दजी विदिशा द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर बृहदद्रव्यसंग्रह पर कक्षा एवं रात्रि में दशधर्मों के अतिरिक्त प्रवचनसार ग्रन्थ पर आकर्षक प्रवचन हुये। समाज में प्रतिदिन लगभग 2000 लोगों ने आपके प्रवचनों का लाभ लिया।

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री सीमन्धर जिनालय में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के प्रबन्ध सम्पादक पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर सरस शैली में सारगर्भित प्रवचन हुये। पर्व के मध्य पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के मैनेजर पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री छतरपुर एवं पण्डित सुशीलजी शास्त्री के मार्मिक प्रवचन का लाभ भी मिला।

प्रतिदिन प्रात: श्री हीराचन्दजी बोहरा एवं पण्डित अनुज जैन जयपुर के सान्निध्य में दशलक्षण विधान का आयोजन किया गया। रात्रि में पं. अनुजजी द्वारा विविध धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया; जिसमें श्री मनोजजी कासलीवाल का विशेष सहयोग रहा। **– पूनमचन्द लुहाड़िया**

सिलवानी (म.प्र.) : यहाँ श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री पधारे। आपके द्वारा प्रात: 'धर्म क्या, कहाँ, कब, कैसे और क्यों' विषय पर एवं रात्रि में दशधर्मों पर व्याख्यान हुये।

दोपहर में आपके द्वारा छहढाला की तीसरी ढाल पर कक्षा चली एवं रात्रि में राजेश खन्ना और संजू समैया के सहयोग से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

अलवर (राज.) : (1) दिग. जैनमंदिर नसिया में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के सहयोग से पंचमेरु नन्दीश्वर विधान का आयोजन पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री एवं पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में हुआ। **(2)** ऋषभदेव मंदिर हलवाई पाड़ा में पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री एवं पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री द्वारा प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित राहुल जैन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **(3)** आदिनाथ मंदिर मन्नीका बड़ में पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री के विविधि विषयों पर प्रवचन हुये। आपने भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये। **(4)** जैन मंदिर शिवाजी पार्क में पण्डित राहुल जैन द्वारा प्रवचन किये गये एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ राज मोहल्ला स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित धनसिंहजी जैन पिड़ावा पधारे। आपके द्वारा दोनों समय प्रवचन के अतिरिक्त बच्चों की पाठशाला एवं छहढाला पर कक्षा भी ली गई।

मौ (भिण्ड) : यहाँ डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर के दोनों समय प्रवचन हुये। इसी अवसर पर ब्र. रविन्द्रकुमारजी, ब्र. संध्याबेन शिकोहाबाद, पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री रामगढ़ एवं पण्डित पवनजी शास्त्री मौ के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ भी मिला। पण्डित सौरभ शास्त्री शाहगढ़ द्वारा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **– अजित जैन**

गुना (म.प्र.) : यहाँ वीतराग-विज्ञान भवन में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया के प्रात: नियमसार एवं रात्रि में समयसार पर प्रवचन हुये। प्रात: पूजन विधान एवं सायंकाल भक्ति होती थी। **– अनिल मडवरिया**

बिजौलिया (भीलवाड़ा) : यहाँ पण्डित सुकुमालजी लुकवासा के दोनों समय प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। **– रमेश धनोप्या**

अहमदाबाद (अमराईबाड़ी) : यहाँ प्रात: पूजन-विधान के बाद पण्डित पुलकितकुमारजी शास्त्री के मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा भी ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

टोकर (उदयपुर) : यहाँ पण्डित रीतेशकुमारजी शास्त्री डडूका के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। आपके द्वारा दोपहर में छहढाला पर कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

अहमदनगर : यहाँ पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। आपके द्वारा ही रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **– महेशचन्द**

नांदेड़ (महा.) : यहाँ पण्डित संजयकुमारजी महाजन वाशिम के तीनों समय क्रमश: छहढाला, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय एवं दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में आपके द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **– प्रेमचन्द जैन**

रतलाम (म.प्र.) यहाँ पण्डित चन्दूभाई फतेपुर के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षशास्त्र एवं रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार पर प्रवचन हुये। मण्डल विधान का आयोजन भी हुआ।

गजपंथा (नासिक) : यहाँ पण्डित राजूभाईजी कानपुर एवं पण्डित अमितकुमारजी शास्त्री लुकवासा द्वारा तीनों समय प्रवचन एवं कक्षा का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

पिड़ावा : यहाँ पण्डित विनोदकुमारजी जैन गुना के प्रात: समयसार पर प्रवचन हुये। दोपहर में करणानुयोग की कक्षा चलाई गई। रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। पण्डित आशीष शास्त्री द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

हरिद्वार : यहाँ पण्डित संतोषकुमारजी बोगार सोलापुर के रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। प्रात: नवलब्धि विधान का आयोजन किया गया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

शाहगढ़ (सागर) : यहाँ पण्डित मनोजकुमारजी शास्त्री अभाना के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशधर्म के स्वरूप पर प्रवचन हुये। दोपहर में गुणस्थान विवेचन एवं छहढाला की तथा सायंकाल बाल कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। **– सचिन जैन**

अभाना (दमोह) : यहाँ पण्डित अभिषेकजी सिलवानी के प्रात: परमात्मप्रकाश पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। आपके द्वारा दोपहर में भक्तामर स्तोत्र पर प्रोढ़कक्षा के अतिरिक्त प्रात: एवं सायं बाल कक्षा भी चलाई गयी। रात्रि में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के सहयोग से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रमों में पण्डित शशांक जैन का सराहनीय सहयोग रहा। **– ऋषभकुमार जैन**

कैराना नगर : यहाँ पण्डित सोनू शास्त्री खतौली का लाभ समाज को मिला। पर्व के अवसर पर सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन हुआ।

डोणगांव (महा.) : यहाँ सौ.स्नेहलता उदापुरकर अकोला के प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक व दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

जबलपुर (रांझी) : यहाँ पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री खड़ैरी के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दस धर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की एवं सायंकाल बालको की कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

बूंदी (राज.) : यहाँ प्रात: सामूहिक पूजन होती थी। पण्डित सुदीपकुमारजी शास्त्री बरगी द्वारा दोपहर एवं सायं बाल कक्षा ली गई तथा रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। विविध सांस्कृति कार्यक्रम भी कराये गये।

अहमदाबाद (पालड़ी) : यहाँ प्रात: पूजन के पश्चात् पण्डित सुदीपकुमारजी शास्त्री घाटोल के मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। दोपहर में भक्तामर एवं सायंकाल बाल कक्षा ली गई। रात्रि में भक्ति के पश्चात् दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

झांसी (उ.प्र.) : यहाँ प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् पण्डित हेमन्तकुमारजी शास्त्री के रत्नकरण्डश्रावकाचार पर प्रवचन हुये। दोपहर में भक्तामर एवं सायंकाल बाल कक्षा ली गई। रात्रि में भक्ति के पश्चात् दशधर्मों पर प्रवचन हुये। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

एत्मादपुर (आगरा) : यहाँ पण्डित शीतल अलमान एवं पण्डित अभिनन्दन पाटील के सान्निध्य में प्रात: पूजन होती थी। प्रात: छहढाला पर प्रवचन, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा तथा रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

बोहडा (चित्तौड़गढ़) : यहाँ पण्डित दीपककुमारजी गंगवाल जयपुर द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं सायं दशधर्म पर प्रवचन के अतिरिक्त दोपहर में करणानुयोग की कक्षा एवं सायंकाल बाल कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

सेमरा (आगरा) : यहाँ पूजन के पश्चात् पण्डित राहुलकुमारजी शास्त्री बिनौता एवं पण्डित रीतेशकुमारजी अहमदाबाद के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ समाज को मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

आगरा (नमक मण्डी) : यहाँ पार्श्वनाथ मंदिर में पण्डित लालारामजी साहू एडवोकेट अशोकनगरवालों के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुये। **– सुभाषचन्द जैन**

दूनी (टोंक) : यहाँ प्रात: दशलक्षण विधान के अतिरिक्त पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री मुम्बई के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

बण्डाबेलई (सागर) : यहाँ पण्डित सुरेशचन्दजी सिंघई भोपाल के सान्निध्य में प्रात: दशलक्षण विधान हुआ। तथा साथ ही तीनों समय आपके प्रवचनों का लाभ मिला। बच्चों की कक्षा भी ली गई। अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की शाखा का पुनर्गठन किया गया। **– राजकुमार जैन**

बाह (आगरा) : यहाँ पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ के प्रात: छहढाला, दोपहर में भक्तामर स्तोत्र एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। आपके द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

करेली (नरसिंहपुर) : यहाँ पण्डित राजीवकुमारजी गुना के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र पर एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। एक दिन पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन हुआ।

बैर (भरतपुर) : यहाँ पण्डित सचीन्द्रकुमारजी शास्त्री ने दोपहर में छहढाला की कक्षा ली एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन किये। आपने सायंकाल बालकक्षा ली एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

लोनारा (खरगोन) : यहाँ पण्डित जितेन्द्रजी चौगुले के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृति कार्यक्रम कराये गये। आपके माध्यम से अनेक अजैन परिवारों में भी धर्म प्रभावना हुई।

आलंद (कर्नाटक) : यहाँ पण्डित विशालजी शास्त्री सर्राफ के प्रात: छहढाला एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई। आपके द्वारा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

शहडोल (म.प्र.) : यहाँ पण्डित विशालजी शास्त्री कान्हेड के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दसधर्म पर प्रवचन हुये। समाज को विदुषी सुषमाजी की तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा तथा पण्डित राजेन्द्रजी के प्रवचनों का लाभ भी मिला। दोपहर में 16 कारण विधान का आयोजन किया गया।

फरिहा (फिरोजाबाद) : यहाँ पण्डित जितेन्द्रकुमारजी यादव के मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में छहढाला एवं सायं बाल कक्षा ली गई। आपके द्वारा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। समाज की दृष्टि से यह कार्यक्रम ऐतिहासिक रहा।

शिरडशहापुर (महा.) : यहाँ पण्डित प्रशांतकुमारजी काले तथा स्थानीय विद्वान पण्डित रमेशचन्दजी महाजन एवं पण्डित प्रेमचन्दजी महाजन के रत्नकरण्ड श्रावकाचार, जिनागमसार एवं दशधर्म पर प्रवचन हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व बालकक्षा भी चली। रात्रि में श्री नाभिराजजी महाजन द्वारा सांस्कृतिक कार्यकम कराये गये। **– भानुराज जैन**

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 54

गतांक से आगे

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

जिसप्रकार महल में राजा रहता है, हवेली में रईस रहता है, झोंपड़ी में गरीब रहता है, बंगले में साहब रहते हैं। महल, हवेली, झोंपड़ी, बंगला यह सब मकान के ही नाम हैं; लेकिन इन विविध नामों से इनमें रहनेवालों की महत्ता–लघुता का पता चलता है, ऐसे ही मंदिर भी मकान का ही नाम है; परन्तु उसमें रहनेवाले भगवान होते हैं।

हवेली कहते ही रईस का ध्यान आ जाता है, वैसे ही मंदिर कहते ही भगवान का ध्यान आ जाता है; इसीप्रकार देहरूपी मंदिर कहते ही भगवान आत्मा का ध्यान आता है।

मंदिर में भगवान रहते हैं; लेकिन भगवान मंदिर नहीं है। इन दोनों में बहुत अंतर है। नौ देवताओं में जिनमंदिर और जिनप्रतिमा नामक भी दो देवता है; जिनमंदिर और जिनप्रतिमा में बहुत अंतर है। जिनमंदिर में जब प्रवेश करते हैं तो उसपर पैर रखकर ही जाना पड़ता है, जिनमंदिर में पैर रखने पड़ते हैं; लेकिन जिन प्रतिमा पर पैर रखना घोर अविनय माना जाता है। यद्यपि दोनों देवता हैं; तब भी एक देवता की छाती पर पैर रखा जाता है एवं दूसरे के चरणों में माथा। ऐसे ही देह तो मंदिर है –अर्थात् चरण रखने योग्य और उसमें रहनेवाला भगवान आत्मा के चरणों में माथा रखने योग्य है। इसप्रकार देह को मंदिर कहने से उसकी महिमा नहीं बढ़ गई है; अपितु आत्मा की ही महिमा बढ़ी है।

कथन में तो ऐसा ही आता है कि मुझे मंदिर के दर्शन करने हैं; लेकिन मंदिर के दर्शन नहीं करना है; अपितु मंदिर के अंदर जो भगवान की मूर्ति विराजमान है, उसके दर्शन करना है। ऐसे ही देह की महिमा में कुछ भी बोला जाय; लेकिन बोला तो तभी जाता है जब उसके अंतर में आत्मा विद्यमान हो। प्रधानमंत्री और चपरासी के मुर्दे में क्या अन्तर है ? दोनों एक से ही हैं; लेकिन प्रधानमंत्री और चपरासी में फर्क है। शरीर के अंदर जो आत्मा है, उसी का फर्क है। जो अंतर खाली मंदिर और मूर्ति से विराजमान मंदिर में है, वही अंतर आत्मा सहित देह में और आत्माविहीन देह में है।

आत्मा को शरीर से भिन्न मानने में इस जीव को थोड़ी समस्या आती है; क्योंकि यह जन्म से मरण तक हमारे साथ रहता है। जन्म से पहले भी हम थे और मरण के पश्चात् भी हम रहेंगे – यह विश्वास बहुत कम व्यक्तियों को होता है। किसने देखा है ? – ऐसा कहकर लोग इसे व्यक्त भी करते हैं। इस भव में आत्मा को देह से भिन्न होते हुए देखा नहीं है और अगले भव पर हमें विश्वास नहीं है; इसलिए भेदविज्ञान होना थोड़ा कठिन है।

इतना कठिन भी नहीं है; क्योंकि यद्यपि हम स्वयं की आत्मा को शरीर से भिन्न होते हुए नहीं देखते हैं; तथापि दूसरों को तो शरीर से भिन्न होते हुए देखते ही हैं। माता–पिता को और कई व्यक्तियों को मरते हुए देखते ही हैं, अतः सरल ही है। क्या हम स्वयं के अनुभव से ही सीखेंगे ?

अरे भाई ! समझदार लोग दूसरों का मरण देखकर ही अपने मरण का निश्चय कर लेते हैं। यह दूसरे नम्बर का देह से भेदविज्ञान का प्रकरण हुआ।

आत्मार्थी को इस भेदविज्ञान में भी अधिक समय लगाने की आवश्यकता नहीं है। अब जो वास्तविक भेदविज्ञान का प्रकरण प्रारम्भ होता है, वह आत्मा में ही पर के लक्ष्य से उत्पन्न होनेवाले जो मोह–राग–द्वेष के परिणाम हैं; वे आत्मा नहीं है, यहाँ से प्रारम्भ होता है।

यद्यपि द्रव्य–गुण–पर्याय सहित आत्मा वर्तमान में राग सहित है; किन्तु वह राग से भी भिन्न हैं।

मंदिर में भगवान है और देह में आत्मा है – यह कथनमात्र ही है। वस्तुतः तो देह देह में है और आत्मा आत्मा में है। देह और आत्मा का एक क्षेत्रावगाहसंबंध है। आत्मा में न देह का प्रवेश है और न ही देह में आत्मा का प्रवेश है; लेकिन राग तो आत्मा की पर्याय में उत्पन्न होता है। देह के साथ आत्मा का संयोग संबंध है एवं आत्मा का राग के साथ क्षणिक तादात्म्य संबंध है।

तादात्म्य दो प्रकार का होता है, एक नित्यतादात्म्य एवं दूसरा क्षणिकतादात्म्य। द्रव्य और गुण का नित्यतादात्म्य संबंध है एवं द्रव्य और पर्याय का क्षणिकतादात्म्य संबंध है; संबंध एक ही है मात्र काल का अंतर है।

जिसप्रकार कोई मिठाई 100 ग्राम खाई या 1 ग्राम खाई; दोनों का स्वाद एक सा ही है, मात्र मात्रा में अंतर है। स्वाद में कोई अंतर नहीं है। क्षणिकतादात्म्य भी तो तादात्म्य ही है।

'देह में आत्मा है पर देह आत्मा नहीं है। आत्मा में राग है, पर आत्मा रागरूप नहीं।' इन शब्दों पर ध्यान देना आवश्यक है। पूर्व में तो यह कहा कि देह आत्मा नहीं है; परन्तु यहाँ ऐसा नहीं कहा कि राग आत्मा नहीं, यहाँ यह कहा है कि आत्मा रागरूप नहीं है, राग का स्वरूप भिन्न है और आत्मा का स्वरूप भिन्न है। इसप्रकार दोनों में भावभेद है, परिभाषा का भेद है; अतः लक्षणभेद है। द्रव्यभेद भी है। द्रव्य में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव चारों ही आ जाते हैं। देह और आत्मा दोनों के द्रव्य पृथक्, क्षेत्र पृथक्, काल पृथक् एवं भाव पृथक् हैं। यही कारण है कि आत्मा रागरूप नहीं है। यद्यपि राग आत्मा में ही उत्पन्न हुआ है; फिर भी आत्मा राग नहीं है, रागरूप नहीं है। इसके लिए आचार्य ने कई उदाहरण दिए हैं।

समयसार परमागम के 72वीं व 74वीं गाथा में कहा है। यद्यपि काई जल में उत्पन्न हुई है; लेकिन वह जल नहीं है। ऐसे ही राग आत्मा में उत्पन्न हुआ है; लेकिन वह आत्मा नहीं है। पीपल में लाख पैदा हुई है; लेकिन लाख पीपल नहीं है; क्योंकि लाख पीपल की घातक है। ऐसे ही राग आत्मा में उत्पन्न होता है; लेकिन राग आत्मा नहीं है।

जाननेरूप ज्ञानपर्याय भी आत्मा में ही उत्पन्न होती है। जिस–प्रकार रागपर्याय का आत्मा के साथ क्षणिकतादात्म्य संबंध है, वैसे ही आत्मा के साथ ज्ञानपर्याय का भी क्षणिकतादात्म्य संबंध ही है, तथा सम्यग्ज्ञानरूप ज्ञानपर्याय जो आत्मा को जानती है; उसका भी आत्मा के साथ क्षणिकतादात्म्य संबंध ही है।

जब राग और ज्ञान दोनों का आत्मा के साथ एकसा ही संबंध है तब दोनों को ही हेय या दोनों को ही उपादेय कहना था। राग मेरा नहीं है और ज्ञान मेरा है – ऐसे कथन का क्या आशय है ?

इसपर आचार्य कहते हैं कि राग से भेदविज्ञान के इस प्रकरण में ज्ञान हेय है – यह नहीं कहा जा सकता; क्योंकि राग को अपना कहना उपचरित–सद्भूतव्यवहारनय का कथन है और ज्ञान पर्याय को अपना कहना अनुपचरितसद्भूत व्यवहार का कथन होगा। यहाँ यह कथन उपयुक्त नहीं है; यद्यपि दोनों के साथ एक ही क्षणिकतादात्म्य संबंध है; लेकिन तब भी राग और ज्ञान दोनों में महान अन्तर है। इसे हम इस उदाहरण से समझते है।

जैसे किसी स्त्री के शादी के पूर्व एक संतान हुई एवं एक संतान शादी के पश्चात् हुई। अब दोनों संतानों का उस स्त्री के साथ क्या संबंध है ? दोनों के साथ मातापन का ही संबंध हुआ न ! जो शादी के पूर्व पुत्र उत्पन्न हुआ वह भी उस माता का पुत्र है एवं जो शादी के पश्चात् पुत्र उत्पन्न होता है वह भी उसी का पुत्र है। इसप्रकार उन दोनों पुत्रों का माता के साथ एक ही संबंध है।

इसे हम एक ऐतिहासिक उदाहरण से और अधिक अच्छी तरह से समझ सकते हैं। कर्ण और कुंती में तथा अर्जुन और कुंती में क्या संबंध है ? कर्ण भी कुंती का ही बेटा है एवं अर्जुन भी कुंती का ही बेटा है। इसप्रकार दोनों में कुंती के साथ माता–पुत्र का ही संबंध है। फिर भी अर्जुन की रक्षा के लिए कुंती जान देने के लिए तैयार है और कर्ण को मारने के लिए कुंती जान देने के लिए तैयार है। अर्जुन और कर्ण की जब लड़ाई हो रही है तब कुंती कर्ण से कवच–कुंडल मांगकर उसे मारने के लिए तैयार है एवं वह अर्जुन को अपनी जान की कीमत पर भी बचाना चाहती है। एक ही माता का दोनों पुत्रों के साथ व्यवहार में यह अंतर क्यों है ? यही न कि एक विवाह के पूर्व की अवैध संतान है और दूसरी विवाह पश्चात् की वैध संतान है।

परपति के संयोग से जो उत्पन्न हो वह अवैध संतान होती है, वह कर्ण जैसी होती है। जो स्वपति के संयोग से हो वह वैध संतान होती है, वह अर्जुन जैसी संतान होती है। राग कर्ण जैसा है एवं ज्ञान अर्जुन जैसा है।

जब किसी माँ–बहिन के गर्भ रहता है तब उसका मनमयूर नाचने लगता है। पति इस समाचार को सुनता है तो वह भी आनंदित होता है। सास, मोहल्लेवाले, पीहरवाले सभी जो भी इस समाचार को सुनता है आनंदित होता है। फिर जब पुत्र उत्पन्न होता है तब बड़े–बड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, हजारों लोगों को भोजन दिया जाता है। इन कार्यक्रमों में माँ बढ़े ही गौरव के साथ अपने पुत्र को आगत अतिथियों की गोद में रखती है।

लेकिन यदि वही पुत्र शादी के पूर्व जन्मता है, तब क्या इस समाचार से सभी खुश होते हैं ? जिसके संयोग से गर्भ रहा है, क्या वह लड्डू बाँटता है ? वह कहता है कि अस्पताल में चलो, गर्भ गिरवाते हैं। माता–पिता दोनों ही उस पुत्र को मारने की योजना बनाते हैं। यह महापाप है जिसकी कल्पना भी हृदय को कँपा देती है। जब भी यह बात मेरे मस्तिष्क में आती है तो मेरा खून खौलने लगता है; क्योंकि इन जैसा महापापी, महाहत्यारा मुझे और कोई भी नहीं दिखता है।

दुनिया में शत्रु हमारे ऊपर आक्रमण करते हैं तो तब माँ–बाप, भाई–बहिन, परिवारजन ही हमारी सुरक्षा करते हैं। एक बालक जब दो वर्ष का होता है, उसे यदि हाथ दिखाते हैं तो वह 'माँ !' कहकर चिल्लाता है; क्योंकि वह समझता है कि मेरी रक्षा करनेवाली माँ है। जिसपर उसका इतना अटूट विश्वास हो, जो रक्षक हो; अब वे ही माता–पिता यदि उसकी हत्या कराने के लिए जाएँ, हत्या कराने के लिए पैसा देवें तो वे कितने पापी हैं ? – क्या इसकी कल्पना की जा सकती है ? जिस डॉक्टर ने सम्पूर्ण विश्व को बचाने के लिए प्रमाण–पत्र लिया है, जिसने सभी का जीवन बचाने की प्रतिज्ञा की है; वह यदि हत्या का ऐसा महापाप करे तो उससे बड़ा पापी कोई नहीं है।

युद्ध का अवसर होता है तो जब दो लोग लड़ते हैं; तब एक यदि निहत्था हो तो उसके पास हथियार देकर उसके साथ क्षत्रिय लड़ता है और यहाँ सामनेवाला निहत्था है, हाथ–पैर नहीं चला सकता है, उसकी बाहर आने की ताकत भी नहीं है। तब भी डॉक्टर और माता–पिता सभी मिलकर एक निहत्थे की हत्या कर देते हैं; इसप्रकार निहत्थे की हत्या करनेवाले कितने पापी होंगे ?

शादी के पूर्व अवैध संतान होती है तब उसे मारने का भाव माता–पिता का होता था; यह पंचमकाल की ही बलिहारी है कि आज तो लोग स्वपति के संयोग से हुए पुत्र को भी मारने की सोच रहे हैं। अब वैध संतान का भी गर्भपात हो रहा है। गर्भ में लड़की हो तो उसका गर्भ गिराना आज सामान्य–सा हो गया है।

ऐसी कोई मजबूत दृढ़संकल्पी माता होती है कि जो अपनी अवैध संतान को भी बचा लेती है; लेकिन क्या इस संतान के उत्पन्न होने पर कोई उत्सव मनाता है ? क्या वैसे ही कार्यक्रम होते हैं जैसे वैध सन्तान के उत्पन्न होने पर होते हैं ?

ऐसे ही राग पर के लक्ष्य से उत्पन्न होनेवाली आत्मा की अवैध संतान है और ज्ञान आत्मा की स्वलक्ष्य से होनेवाली वैध संतान है; इसलिए राग और ज्ञान को एक ही कोटि में नहीं रखा जा सकता है।

यह भेदविज्ञान का तीसरा स्तर है, जिसमें आत्मा को राग से भिन्न बताया गया है।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

(पर्व समाचार .....)

रुडकी : यहाँ पण्डित जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री के मोक्षमार्गप्रकाशक, छहढाला एवं दसधर्म पर प्रवचन हुये। फैडरेशन की शाखा का गठन किया गया। इसी अवसर पर विधायक सुरेशचन्दजी के करकमलों से नवीन पाठशाला का उद्घाटन किया गया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

पीसांगन : यहाँ पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के दोपहर एवं रात्रि में प्रवचन हुये तथा प्रात: पण्डित प्रयंकजी रहली द्वारा समयसार कलश विधान कराया गया। रात्रि में पं. विकासजी खनियांधाना एवं पं. पंकजजी हीरापुर द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

छपरौली : यहाँ पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा इन्द्रध्वज विधान कराया गया। साथ ही आपके प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ भी समाज को मिला। बन्द पाठशाला को पुन: प्रारंभ किया गया। **– अनिल जैन**

अमलाई (शहडोल) : यहाँ पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री बरा के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ समाज को मिला। **– सुनील जैन सर्राफ**

ग्वालियर (सोडे का कुआ) : यहाँ पण्डित विमलकुमारजी जैन जलेसर के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दसधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई। यथासमय पण्डित महेशचन्दजी के प्रवचन का लाभ भी मिला। रात्रि में विविध ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

इन्दौर (रामचन्द्र नगर) : यहाँ पण्डित सुदर्शनजी बीना के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक पर, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर तथा रात्रि में समयसार व रत्नकरण्डश्रावकाचार पर प्रवचन हुये। पाठशाला के बालकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

बड़ौत (बागपत) : यहाँ पण्डित सुमितप्रकाशजी अहमदाबाद के प्रात: समयसार, दोपहर मोक्षमार्गप्रकाशक तथा रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार से दशधर्मों पर प्रवचन हुये। इन्हीं दिनों पंचपरमेष्ठी विधान, शान्तिविधान, रत्नत्रय विधान एवं 64 ऋद्धि विधान का आयोजन भी हुआ।

आगर (मालवा) : यहाँ पण्डित स्वतंत्रजी खरगापुर के प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार व तत्त्वार्थसूत्र पर तथा रात्रि में दसधर्मों पर प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित दीपकजी जबेरा द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। **– भेंरूलाल**

वाशिम (महा.) : यहाँ पण्डित निकलंक जैन शास्त्री कोटा के दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक एवं दशधर्म पर प्रवचन हुये । दोपहर में लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा चलाई गई । ज्ञातव्य है कि यहाँ श्री संतोषकुमारजी पाटनी एवं कुलभूषणजी के नेतृत्व में 15 पाठशालायें चल रही है। पण्डितजी द्वारा उन सबका निरीक्षण कर उन्हें सम्बोधित किया गया।

हिंगोली (महा.) : यहाँ पण्डित संजयजी (पुजारी) और पण्डित सुरेशजी काले के माध्यम से प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में करणानुयोग की कक्षा ली गई।

रहली (सागर) : यहाँ पण्डित शाकुलजी मेरठ द्वारा तीनों समय प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

अलीगढ़ (राज.) : यहाँ पण्डित विमोश जैन खड़ैरी और पण्डित अर्पित जैन बड़ामलहरा के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र एवं सायं दसधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में बालकक्षा ली गई। सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

और अब महामहोपाध्याय

मुम्बई : भारतीय विद्याभवन, चौपाटी के खचाखच भरे विशाल हॉल में आयोजित समारोह में – वाणीविभूषण, आध्यात्मिक तत्त्वज्ञानी, जैनरत्न, अध्यात्मदिवाकर, विद्यावाचस्पति, परमागमविशारद, अध्यात्म शिरोमणि आदि अनेकानेक उपाधियों से विभूषित तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** को अध्यात्म स्टडी सर्किल, मुम्बई द्वारा **महामहोपाध्याय** की उपाधि से विभूषित किया गया है।

अध्यात्म स्टडी सर्किल दिगम्बर–श्वेताम्बर आदि सभी जैनों में अध्यात्म का प्रचार–प्रसार करनेवाली बहुचर्चित संस्था है। डॉ. भारिल्ल विगत बीस वर्ष से इस संस्था से जुड़े हुये हैं और उनका सहयोग इसके जन्म से ही लगातार इसे प्राप्त हो रहा है।

डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का आकर्षण ही एक ऐसा आकर्षण है; जो संस्था को दिन–दूनी रात चौगुनी प्रगति दिला रहा है।

सत्साहित्य नि:शुल्क मंगा लें

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल विरचित **समयसार अनुशीलन भाग –5** नामक पुस्तक पक्की बाइण्डिंग, पृष्ठ – 550 (पाँच सौ पचास), कीमत – 25 रुपया श्रीमती पुष्पाबेन कान्तिभाई मोटाणी, मुम्बई की ओर से मुनिराजों, ब्रह्मचारियों, मंदिरों, संस्थाओं, वाचनालयों एवं सद्गृहस्थों को स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेंट की जा रही है।

इच्छुक महानुभाव डाक खर्च के लिये 8 रुपये के डाक टिकट निम्न पते पर भेजकर नि:शुल्क मंगा लेवें। हमारे कार्यालय से हाथों–हाथ प्राप्त करनेवाले महानुभावों को टिकिट देने आवश्यक नहीं है। ध्यान रहे, टिकट भेजने की अन्तिम तिथि 31 अक्टूबर 2002 है।

जिन्होंने पहले पत्र भेजे हैं, उन्हें पुस्तक भेज रहे हैं, वे पुन: पत्र न लिखें।

पता – प्रबन्धक, नि:शुल्क सत्साहित्य वितरण विभाग, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर – 15

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **अक्टूबर (प्रथम) 2002**
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए–4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए– 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 705581, 707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 704127